तुलसी प्रज्ञा

TULSÍ PRAJÑÁ

वर्ष 43 • अंक 169-170 • जनवरी-जून, 2016

A Peer Reviewed Research Quarterly

जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341 306 (राजस्थान) भारत
JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE
Ladnun - 341 306, Rajasthan, India

TULSÍ PRAJÑÁ
Vol. 169-170

जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ
प्रकाशन सूची

ा	लेखक/सम्पादक	मूल्य
eflection & Clarification	Acharya Mahaprajna	30
iews & Issues	Acharya Mahaprajna	30
gwan Mahavir Life & Doctrine	Shri S.C. Rampuria	300
The Third Eye	Acharya Mahaprajna	195
Jainism	Prof. M.R. Gelra	200
t for Truth	Acharya Mahaprajna	195
Silence	Acharya Mahaprajna	140
ato Jainism	Sadhvi Vishrut Vibha	39
es & Science	Prof (Dr.) M.R. Gelra	400
ence Relative Economics ew Social Order	Prof. B.R. Dugar/Dr. Satya Prajna/ Dr. Samani Ritu Prajna	500
ogy	Late Shri Jetha Lal S. Zaveri/ Prof. Muni Mahendra Kumar	200
ara	Late Shri Jetha Lal S. Zaveri/ Prof. Muni Mahendra Kumar	450
bhasika Sabdakosa	Mukhya Niyojika Sadhavi Vishrutavibha	1125
i-2	Acharya Mahaprajna Eng. Trans. by Prof. Muni Mahendra Kumar & Late Dr. N. Tatia	1695
VBU Research Work	Samani Agam Prajna/Dr. Vandana Mehta	100
aphy of Jain Text in Tamil	Shri K.P. Aravaanan	50
igma of the Universe	Prof. Muni Mahendra Kumar	500
Meditation and Human Health	Prof. J.P.N. Mishra and Dr. P.S. Shekhawat	500
हाप्रज्ञ का संस्कृत साहित्य	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	550
ाचार्य महाप्रज्ञ का योगदान	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय/डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा	100
काय भाग-1	श्री श्रीचंद रामपुरिया	50
काय भाग-2	श्री श्रीचंद रामपुरिया	60
परिक्रमा	श्री श्रीचंद रामपुरिया	60
क	श्री श्रीचंद रामपुरिया	150
वर्द्धमान जीवन प्रसंग	श्री श्रीचंद रामपुरिया	80
क निर्युक्ति खण्ड-1	डॉ. समणी कुसुम प्रज्ञा	400
ग और महावीर	साध्वी शुभ्रयशा	150
का समीक्षात्मक अनुशीलन	समणी स्थित प्रज्ञा	100
चरितम	डॉ. हरिशंकर पाण्डेय	100
शिक्षा की उपयोगिता	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	100
ह	डॉ. आनन्दप्रकाश त्रिपाठी	100
स्कृति और जीवन मूल्य भाग-1,2,3	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा	75
यायकर्णिका	पं. विश्वनाथ मिश्र	120
विज्ञान और स्वास्थ्य	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा/समणी श्रेयस प्रज्ञा	120
शिष्ट्य	डॉ. जे.पी.एन. मिश्रा	400
ागधी साहित्य में गणित	डॉ. अनुपम जैन	200
ारिभाषिक शब्दकोश	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
र्शन के प्रमुख सिद्धान्त	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा	110
दर्शन एवं मूल्य विकास	डॉ. समणी मल्लि प्रज्ञा/डॉ. हेमलता जोशी	160
ध्यान और योग	डॉ. समणी ऋजु प्रज्ञा	150

प्रकाशक - सम्पादक - प्रो. अनिल धर द्वारा जैन विश्व भारती संस्थान

Subject	Author	Page No.
ीता का ज्ञानयोग	प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी 'रत्नेश'	86-93
ूत्र स्वाध्याय का अधिकारी कौन?	मुनि मदन कुमार	94-99
ाँधी दर्शन में अहिंसा एवं शिक्षा के आयाम	डॉ. जुगल किशोर दाधीच	100-105
ांति स्थापना में वर्तमान शांति शिक्षा ा योगदान	डॉ. रवीन्द्र सिंह राठौड़	106-110
त्तराध्ययन सूत्र की कथाओं में हित मानवीय संवेदना का प्रतिपादन	डॉ. वंदना मेहता	111-119
नस्पतिकाय का शारीरिक उपकार	समणी ज्योतिप्रज्ञा	120-126
ाँधीवादी चिन्तन में नारी विकास	भारती कंवर	127-136

धृति

कुछ व्यक्ति शारीरिक कष्ट सह लेते हैं, पर मानसिक कष्ट या दुःख में अधीर हो जाते हैं, घुटने टेक देते हैं। थोड़े से मानसिक कष्ट में वे टूट जाते हैं। कुछ व्यक्ति मानसिक दुविधाओं को सहने में सक्षम होते हैं पर शारीरिक कष्टों में घबरा जाते हैं। हाय रे, कहने लग जाते हैं। हमें ऐसे व्यक्तित्व का निर्माण करना है जो शारीरिक कष्टों को झेल सके और मानसिक व्याथाओं को भी झेल सकें।

—आचार्य महाप्रज्ञ

ाँधी दर्शन में अहिंसा एवं शिक्षा के आयाम

डॉ. जुगल किशोर दाधीच

हजारों वर्षों से अहिंसा विश्वभर के लोगों में उनके जीवन, उनकी अभिवृत्तियों र उनकी आन्तरिक अच्छाईयों में स्वाभाविक रूप से विद्यमान रही है। अहिंसा असीम शक्ति को हमारे पूर्वजों, दार्शनिक धर्माचायों ने बड़ी गंभीरता से वाना। महावीर, बुद्ध नागसेन में अहिंसा का सैद्धान्तिक और नैतिक आधार लब्ध है। जैन दर्शन में अहिंसा का आधार मानते हुए कहा गया है कि जो व्यक्ति ातिसूक्ष्म प्राणियों (वनस्पति) का हनन करता है। वह स्वयं अपनी आत्मा का न करता है। जैन दर्शन में अहिंसा अणुव्रत के पाँच अतिचारों बंध, वध, छेद, भारारोपण, अत्रपान का उल्लेख भी हैं। इन अतिचारों पर विचार करने से त होता है कि जीवों के प्रति कष्ट या हिंसा ही नहीं अतिभारारोपण आदि के शोषण भी हिंसा में शामिल है।

अहिंसा के सिद्धान्त का प्रतिरोध की रणनीति और तकनीक के रूप में विकास मा गाँधी का विशिष्ट योगदान था। वे अहिंसा को अमोघ अस्त्र मानते थे जो ी भी हथियार से शक्तिशाली था। सामाजिक संघर्षों से निपटने के लिए वे तगत उदाहरण प्रस्तुत करते और अनुनय का प्रयोग करते थे तथा किसी भी र के सहायक कार्य या अहिंसक प्रतिरोध के लिए खोज, समझौता, वार्त्ता, पंचाट, न एवं अल्टीमेटम, आत्मशुद्धिकरण, हड़ताल, धरना, आर्थिक बहिष्कार, लगानबंदी, त, असहयोग, सामाजिक बहिष्कार, सविनय अवज्ञा, दृढ निश्चयी सत्याग्रह, ान्तर सरकार तथा उपवास आदि उनकी कार्यवाही के तरीके थे।[1]

ा : प्रेम, दया और सहिष्णुता

प्रेम अहिंसा का विशिष्ट गुण है। जिस पर अहिंसक पद्धति का अस्तित्व निर्भर सका उद्देश्य विश्व के समस्त जीवों और वस्तुओं में गहरी आत्मीयता,

बन्धुत्व और एकता का अनुभव करना है। प्रेम ऐसी भावना है जिससे सबके कल्याण और उन्नति के भावों का प्रादुर्भाव होता है। इसी के कारण मनुष्य निर्भीक, स्पष्टवादी, स्वतन्त्र विचारों वाला और सत्य की तरफ अग्रसर होता है। प्रेम से ही अपनी अनन्त और असीम शक्ति का बोध होता है।

अहिंसा का सामाजिक, आर्थिक एवं राजनीतिक स्वरूप

अहिंसा गत्यात्मक शक्ति और समाज परिवर्तन का प्रभावशाली उपकरण है। जीवन अपने आप में समग्र हैं और उसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जैसे विभाग अपने आप में समग्र हैं और उसमें सामाजिक, आर्थिक और राजनैतिक जैसे विभाग नहीं है। अहिंसा सिद्धान्त जीवन को समग्रता की ओर ले जाता है तथा वैयक्तिक और सामाजिक जीवन के विभिन्न पहलुओं तक व्यापक है।[2]

सामाजिक क्षेत्र में अहिंसा सामाजिक विषमता अर्थात् रंग, नस्ल, जाति आदि पर आधारित भेदभाव के स्थान पर सर्व प्राणी समानता के सिद्धान्त को प्रस्तुत करती है। विभिन्न रंग, नस्ल, जाति के लोगों का सहअस्तित्व संभव है। क्योंकि उनका अस्तित्व परस्पर सापेक्ष है। वे सहिष्णु होकर अपने बीच व्याप्त समन्वय के सूत्रों की खोज करते हैं तथा उनका शान्तिपूर्ण अस्तित्व संभव हो सकता हैं।

अहिंसा के आर्थिक स्वरूप के अंतर्गत मुख्यतः आर्थिक शोषण एवं विषमता को खत्म करने पर प्रमुख रूप से विचार किया जाता है। अहिंसा का आर्थिक स्वरूप मूलभूत आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु उत्पादन को स्वीकार करता है। किन्तु उत्पादन की प्राथमिकताओं में ऐसे उत्पादन को स्वीकार नहीं करता जो हिंसा का निमित्त बनता है। इसलिये अहिंसा को केन्द्र में रखकर उत्पादन की प्राथमिकताओं के संदर्भ में जैन दर्शन तीन प्रमुख बिन्दु प्रस्तुत करता है[3]-

1. अपरिग्रह और व्यक्तिगत उपभोग के सीमांकन द्वारा उत्पादन के संसाधनों को आवश्यक वस्तुओं के लिए मुक्त करना।

2. किन वस्तुओं का उत्पादन न किया जाये इसका दिशा-निर्देश प्रदान करना। जैसे हिंसक शस्त्रों का निर्माण न किया जाये।

3. उत्पादन साधन शुद्धि के निर्देश यथा शोषण न करना, आजीविका का विच्छेद न करना आदि।

अहिंसा व चरखे की व्यापक परिधि

महात्मा गाँधी उत्पादन के समस्त साधनों को विकेन्द्रित करके उन्हें प्रत्यक्ष रूप से प्रजा के हाथों में दे देना चाहते थे। ताकि समाज के केन्द्रीय व्यवस्थापक प्रजा के हाथ से सत्ता छीनने की चेष्टा करे त्यों ही प्रजा उसे असहयोग करे उसे विफल कर दे। यही कारण है कि

चरखे को केन्द्र मानकर मनुष्य को जिन्दा रहने के लिए आवश्यक प्राथमिक
वस्तुओं के उत्पादन प्रजा को खुद प्रत्यक्ष रूप से कर लेने की सलाह देते थे।
पनी सत्ता की रक्षा करने की शक्ति हमेशा अपने ही हाथों में रख सके।[4]

गाँधी के अनुसार जिस राजनैतिक व्यवस्था में व्यक्ति की स्वतन्त्रता का हनन
जहां व्यक्ति और राष्ट्र का संबंध महज यांत्रिक न होकर व्यक्ति की स्वतंत्रता
किया जाता है। वह राजनैतिक व्यवस्था अहिंसा से अनुप्राणित होती है। हिसां
, सुरक्षा और कानून व्यवस्था को बनाये रखना ही अहिंसा का राजनैतिक स्वरूप
तु व्यक्ति का हित अथवा मानव कल्याण भी उसके अभिन्न अंग बनते हैं। ऐसी
व्यवस्था अभय पर आधारित, समानता से परिपूर्ण, शाश्वत मूल्यों की संरक्षक
कों द्वारा समर्थित होगी। ऐसी शासन व्यवस्था में ही मानव विश्व शान्ति के लक्ष्य
र सकेंगे।

ा आधारित राजनीति में हिंसा की कोई संभावना नहीं हैं महात्मा गाँधी ने कहा—
र हिंसा कभी साथ नहीं रह सकते। अहिंसा की अनुपस्थिति में प्रजातन्त्र केवल
को ही है। इससे अच्छा होगा कि हम तानाशाही के समर्थक हो जाए।[5]

ाँधी एवं शिक्षा

मा गाँधी के शिक्षा-दर्शन में दो दृष्टिकोण महत्वपूर्ण रूप से दृष्टिगोचर होते हैं-

ाष्ट्रीय दृष्किोण

मानववादी दृष्टिकोण

त्मा गाँधी के राष्ट्रीय दृष्टिकोण का स्वरूप ज्यों-जयों महात्मा गाँधी ने अंग्रेजी
संघर्ष को तीव्र किया त्यों-त्यों अधिक पुष्ट व सशक्त होकर सामने आया। वर्ष
के असहयोग आन्दालन में महात्मा गाँधी ने अध्यापकों तथा विद्यार्थियों के ऊपर
यित्व डाला और उनसे स्कूल और कॉलेज छोड़ने को कहा। महात्मा गाँधी केवल
ारी, विध्वंसक दृष्टिकोण नहीं रखते थे, उनका दृष्टिकोण रचनात्मक रहता था,
उन्होंने अंग्रेजी हुकुमत द्वारा चलाई गई अनुपयोगी शिक्षा के विकल्प रूप राष्ट्रीय
ों की स्थापना का आन्दोलन चलाया और देश में कई ऐसे राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित

ात्मा गाँधी मनुष्य से शरीर, आत्मा और भावना के सम्पूर्ण विकास के लिए शिक्षा
श्यक मानते थे। साक्षरता शिक्षा का न तो अंत है और न ही शुरूआत यह एक
है जिसके द्वारा पुरूष और स्त्रियों को शिक्षित किया जा सकता है। आदर्श शिक्षा
के सभी क्षेत्रों पर व्यापक प्रभाव डालती है और शारीरिक, मानसिक, नैतिक तथा
त्मक विकास को पूर्णता प्रदान करती है। वर्तमान शिक्षा पद्धति को वे उचित नहीं

मानते थे। ऐसी शिक्षा जिसमें बच्चे अपने माता-पिता से दूर होते चले जाये तथा अपना पैतृक व्यवसाय जिसमें उनका जन्म हुआ है, को भूल जाय, को महात्मा गाँधी शिक्षा नहीं अपितु अशिक्षा की संज्ञा देते थे। शिक्षा की इस दोष पूर्ण प्रणाली के प्रतिकार के लिए उन्होंने जिस शिक्षा प्रणाली की रूप रेखा रखी वह बुनियादी शिक्षा कहलाई। इसके पीछे महात्मा गाँधी का मूल उद्देश्य 'शोषण विहीन समाज की स्थापना करना क्योंकि शिक्षा के बिना स्वस्थ समाज का निर्माण असंभव है। अतः महात्मा गाँधी ने जो शिक्षा के उद्देश्यों एवम् सिद्धांतों की व्याख्या की तथा प्रारंभिक शिक्षा योजना उनके शिक्षा-दर्शन का मूर्त रूप है। अतः उनका शिक्षा दर्शन उनको एक शिक्षा शास्त्री के रूप में भी समाज के सामने प्रस्तुत करता है। उनका मानना था कि मेरे प्रिय भारत में बच्चों को 3H की अर्थात् head, hand, heart की शिक्षा दी जावे। शिक्षा उन्हें स्वावलम्बी बनाए और वे देश को मजबूत बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सके।[6]

महात्मा गाँधी भारतीय शिक्षा को 'द ब्यूटीफुल ट्री' कहा करते थे। इसके पीछे कारण यह था कि महात्मा गाँधी ने भारत की शिक्षा के बारे में जो कुछ पढ़ा था, उससे पाया था कि भारत में शिक्षा सरकारों के बजाय समाज के अधीन थी। महात्मा गाँधी यह बात अच्छी तरह से जानते थे कि अंग्रेजों ने न केवल हमारे अर्थतंत्र और कुटीर उद्योगों को समाप्त कर हमारी पूरी अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से डस लिया है, बल्कि भारत का सांस्कृतिक, साहित्यिक, नैतिक और आध्यात्मिक विखण्डन भी किया, जिससे भारत अपने ज्ञान-गौरव को ही भूल गया। अंग्रेजी - शिक्षा से आच्छन्न यहां के कुछ बड़े घरानों के लोग भारत भाग्य विधाता बन गए। 15 नवम्बर, 1920 को अहमदाबाद के विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुए महात्मा गाँधी ने कहा "जिस विद्या से धर्म की रक्षा हो सके वही विद्या है। सा विद्या या विमुक्तये' जिससे मुक्ति मिले, वही विद्या हैं मुक्ति दो प्रकार की है एक मुक्ति वह है जो देश को पराधीनता से छुड़ाये। वह थोड़े समय के लिए या क्षणिक होती है। दूसरी मुक्ति व्यापक अर्थ में सदा के लिए मुक्ति। मोक्ष, जिसे परमधर्म कहते है, प्राप्त करना हो तो सांसारिक मुक्ति भी अवश्य होनी चाहिए। अनेक भयों में रहने वाला मनुष्य स्थायी मोक्ष प्राप्त नहीं कर सकता। स्थायी मोक्ष प्राप्त करना हो तो निकट वाला मोक्ष प्राप्त करना ही पड़ेगा। जिस विद्या से हमारी मुक्ति दूर जाती है वह विद्या त्याज्य है, वह विद्या राक्षसी है, वह विद्या धर्म विरूद्ध है। सरकारी विद्यालय में मिलने वाली विद्या धर्म विरूद्ध है। सरकारी विद्यालय में मिलने वाली विद्या कैसी भी हो त्याज्य है एवं राक्षसी सरकार द्वारा मिलने के कारण तो सर्वथा त्याज्य है।[7]

यंग इण्डिया में महात्मा गाँधी ने अपने सुचिन्तित विचार राष्ट्रीय शिक्षा पर व्यक्त करते है। उन्होने उसमें तत्कालीन शिक्षा के तीन दोष बताये है-

ह विदेशी संस्कृति पर आधारित है।

ह हृदय और हाथ के विकास की अपेक्षा करती है और केवल मस्तिष्क के विकास रखती है।

देशी भाषा के माध्यम से सच्ची शिक्षा देना असंभव है।[9]

को इस अंग्रेजी दोषपूर्ण प्रणाली के प्रतिकार के लिए उन्होंने जिस शिक्षा प्रणाली खा रखी थी वह बुनियादी शिक्षा कहलाई। इस शिक्षा प्रणाली को कार्य रूप देने क्टूबर 1937 में शिक्षा से जुड़े वरिष्ठ लोगों तथा शिक्षा शास्त्रियों का एक सम्मेलन ाष्ट्र) में आयोजित किया गया था। इस सम्मेलन में बुनियादी शिक्षा के संबंध में निम्न गये- 1. 7 से 14 वर्ष आयु वर्ग के लिए अनिवार्य और निःशुल्क शिक्षा, 2. शिक्षा मातृभाषा हो, 3. शिक्षा किसी हस्तकला को केन्द्र बना कर दी जाये, 4. शिक्षा ीय एवम् राष्ट्रीय गुणों का विकास किया जाय।[10]

ा गाँधी शिक्षा का केन्द्र हस्तकला को बनाने के पक्षधर थे। वास्तव में हस्तकला ाध्यम है जिससे व्यक्ति अपनी न्यूनतम दैहिक आवश्यकताओं की पूर्ति कर सकता नियादी शिक्षा राष्ट्रीय सभ्यता, संस्कृति के नजदीक थी, साथ ही साथ ही साथ जीवन के आधारभूत व्यवसायों से जुड़ी हुई थी तथा सीखे हुए आधारभूत शिल्प के अपने जीवन का निर्वाह कर सकता था। अतः यह शिक्षा हमारे जीवन की बुनियाद ते जुड़ी हुई थी इसलिए इसका नाम बुनियादी या आधारभूत शिक्षा रखा गया।

शिक्षा का उद्देश्य लोगों को सर्वोदय की ओर ले जाना था। उनका कहना था ी शिक्षा शहर और गांव के संबंधों को स्वस्थ और नैतिकपूर्ण आधार देगी तथा र्तमान सामाजिक सुरक्षाएवम् वर्गों के विषाक्त संबंधों की अनेक बुराईयां को दूर ग्रामों में शनेः शनैः हो रहे विनाश को भी रोकेगी तथा अधिक साधन और सुविध ले में सम्पन्न और विपन्न व्यक्तियों का कृत्रिम भेद मिट सकेगा। प्रत्येक व्यक्ति टी और स्वतंत्रता का अधिकार मिल सकेगा।[11]

म महात्मा गाँधी द्वारा भारतीय जीवन को दृष्टिगत रखते हुए वातावरण के शिक्षा योजना प्रस्तुत की गई जिसको कार्य रूप में परिणत करने पर भारतीय क नया जीवन आने की संभावना है। महात्मा गाँधी हृदय से आदर्शवादी थे ीवन के अंतिम लक्ष्य सत्य को प्राप्त करने की प्रेरणा प्रदान करते हैं। महात्मा ाजनवादी भी कह सकते है क्योंकि वे बालक की रूचि के अनुसार क्रिया करके ल देते हैं, उनको प्रकृतिवादी इसलिए कह सकते है क्योंकि वे बालक को उसकी का विकास उनके प्रयोग द्वारा हुआ। 1948 में महात्मा गाँधी की मृत्यु के बाद ादी शिक्षा का कार्यक्रम चलता रहा। विभिन्न प्रदेशों ने विभिन्न प्रकार से उनका

क्रियान्वयन होता रहा। भारत सरकार ने श्री रामंचदन की अध्यक्षता में बुनियादी शिक्षा की स्थिति के मूल्यांकन हेतु एक समिति बनायी। तत्पश्चात कोठारी कमीशन (1964-66) का भी गठन किया गया।[12] उसके बाद भी अनेकानेक कमीशन शिक्षा क्षेत्र में गठित किये गये है। इन सभी के सुझावों ने बुनियादी शिक्षा की बढती प्रासंगिकता के महत्व को दृढ़ किया हैं। आज जो शिक्षा न केवल अपने देश में प्रत्युत पूरे विश्व में चल रही है उसका लक्ष्य समाज को दो वर्गों में बांटना है एक समृद्ध और दूसरा शोषित और गरीब। यह स्थिति चल नही सकती इसलिए ऐसी शिक्षा आवश्यक है जिससे मनुष्य की श्रम के प्रति निष्ठा हो, सबसे समानता का भाव हो।

सन्दर्भ सूची -

1. द कलेक्टेंड वर्क्स ऑफ महात्मा गांधी, खण्ड-18, पृ. 297-300
2. योजना (मासिक पत्रिका), अगस्त 1998, पृ. 27-34
3. सम्पूर्ण गांधी वाड्मय, खण्ड-18, पृ. 491-92
4. वही, खण्ड-21, पृ. 37
5. वही, खण्ड-66, पृ. 293-305
6. योजना, वही
7. (अ) रिपोर्ट ऑफ दी असेस्मेंट कमेटी आन बेसिक एजूकेशन, मिनिस्ट्री एजूकेशन, मिनिस्ट्री ऑफ एजुकेशन एण्ड सोशल वेल फेयर, 1957
   (ब) रिपोर्ट ऑफ दि एजुकेशन कमीशन (1964-66) पैरा 1.25
8. जैन, अलका, अहिंसा- एक अभिनव प्रशिक्षण तकनीक, रीगल पब्लिकेशन, नई दिल्ली, 2009
9. कौशिक, आशा, (सं.) गाँधी नयी सदी के लिए, रावत पब्लिकेशन, जयपुर, 2000
10. कौशिक, आशा, गाँधी चिंतन (तुलनात्मक परिप्रेक्ष्य) भाग-1, रूपा बुक्स, जयपुर, 1995
11. कमल के.एल. गाँधी चिंतन, जयपुर पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2009
12. सिंह, रामजी गाँधीजी और मानवता का भविष्य, कॉमन वेल्थ पेब्लिकेशन नई दिल्ली, 2009

सहआचार्य
अहिंसा एवं शांति विभाग
जैन विश्व भारती संस्थान
लाडनूं - 341306 (नागौर) राज.